

॥ अथ ॥

अनन्तव्रत कथा भा०टी०

॥ प्रारम्भः ॥

प्रकाशक—बा. ठाकुरप्रसाद गुप्त बुकसेलर, कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

श्रीगणेशायनमः ॥ एक समय नैमिषारण्य क्षेत्र के विषय युधिष्ठिर राजा ने श्रीकृष्ण जी से प्रश्न किया कि, हे महाराज अनन्त का जो व्रत है वह किस काल

युधिष्ठिरोवाच॥अनंतव्रतविख्या तंकिंपुरायंब्रूहिकेशव ॥ पूर्वंकेनकृ तंस्वामिन्कथाकस्यचकीदृशी।१। श्रीकृष्णउवाच॥शृणुपाण्डवयत्ने

में कर्तव्य है और पहले किसने उस व्रत को किया है सो कृपा करके मेरे आगे वर्णन करो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण

अ० चन्द्र जी बोले हे राजा युधिष्ठिर पहले सतयुग में सुमंत नाम ब्राह्मण ने इस व्रतको धारण किया है और जो मनुष्य इस व्रत को धारण करेगा उसके सात जन्म क०

नसप्तजन्माघनाशिनी ॥ पुराकृत युगस्यादौसुमंतोनामवैद्विजः॥२॥ अयोध्यायां सपत्नीको वासंचक्रे ह्यपुत्रकः ॥ पत्नी तस्यमृतापूर्वं

के पाप नाशको प्राप्त होयँगे ॥ २ ॥ हे राजन् ! अयोध्या नाम नगरी में वह सुमन्त नाम ब्राह्मण सप- ९

अयोध्या नाम नगरी में वह सुमन्त नाम ब्राह्मण सप-

त्नीक पुत्र करके रहित वास करता था, दैवयोग से उसंकी स्त्री एक कन्या सुशीला नाम छोड़के मृत्यु को प्राप्त हुई ॥ ३ ॥ ताउपरांत जब वह कन्या विवाह

त्यक्त्वाकन्यांसुशीलका ॥ ३ ॥
दृष्ट्वाकन्याविवाहार्थं गतःसमुनि
वेश्मनि ॥ कौंडिन्यञ्चशुभंदृष्ट्वा
ग्दानंकृतवान्द्विजः॥४॥ लग्नंनिरू

योग्य भई तब सुमंत ब्राह्मण कौंडिन्य नाम ब्राह्मण के घर जाय उसको रूपवान गुणवान देख सगाई करता

अ० भया ॥ ४ ॥ तिस पीछे महर्षियों को बुलाय शास्त्र के अनुसार कौंडिन्य ऋषि को कन्यांदान देता भया ॥५॥ क०

२ पितंतत्रयथाशास्त्रंमहर्षिभिः॥ ऋषिभिस्सहमायातः कौंडिन्यस्यविवाहितुम् ॥ ५ ॥ भक्ष्यं भोज्यं चवहुधामुनिनांदत्तवान्द्विजः ॥ रथो

और विवाह के समय नानाप्रकार के भक्ष्य भोज्य (भोजन) हैं तिनको खिलायकर घोड़ा करके संयुक्त २

(भोजन) हैं तिनको खिलायकर घोड़ों करके संयुक्त २

जो रथ और वस्त्र आभूषण सो देता भया ॥ ६ ॥ विवाह के अनंतर कौंडिन्य नाम ऋषीश्वर जो हैं सो सुशीला को रथ में बैठाय कर काशी नगरी को गमन

हयंयुतोदत्तोवस्त्राणि भूषणानिच ॥६॥ विवाहशीलांकौंडिन्योगतः काशींपुरींप्रति ॥ गच्छन्मार्गेसरो दृष्ट्वासुशीलांवाक्यमब्रवीत् ॥७॥

करता भया सो मार्ग में जाते हुए एक सुन्दर तालाब को देखकर कौंडिन्य नामी ऋषि बोले ॥७॥ हे प्रिये !

अ० ३ अब मध्याह्न हो गया है पूजा का समय है इस तालाब में स्नान करना योग्य है ऐसा कहकर विधिवत स्नान करके उसी स्थान में प्राप्त होता भया ॥ और सुशीला क०

स्नास्यामिचतडागेस्मिन् पूजार्थं मध्यगेरवौ । गत्वास्नात्वाचविधि वत्पुनस्तत्रसमागतः ॥ ८ ॥ आ गम्यतांप्रभावाच्यं तत्रस्नानंकरो

से आनकर कहा हे प्रिये ! तुम भी उसी जगह स्नान करो वह स्थान अप्सरान के गणों करके शोभित है ॥ ३

करो वह स्थान अप्सरान के गणों करके शोभित है ॥

॥ ६ ॥ तब अपने पति के वचन को सुनकर सुशीला अकेली गई और एकांत में जहां स्त्रियां न्हा रहीं थीं वहीं उस तालाब में स्नान करने के उपरान्त क्या देखती

स्यहम् ॥ तत्रस्नानंप्रकर्त्तव्यंयत्र चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ९ ॥ सुशीलया कृतंस्नानंकथांश्रुत्वागुरोर्मुखात् । धृत्वानंतंकरेवामेभर्तारं क्षिप्रमाय

भई कि देवताओं की कन्या बैठी हैं और बृहस्पति जी कथा कह रहे हैं यह भी कथा सुनती भई और अनंत

अ० को वाम हाथ में धारण करती भई ॥१०॥ ता उपरांत क०
फिर सुशीला अपने पति के साथ रथ में बैठकर घर

४ यौ ॥ १० ॥ दत्वाभुक्त्वासमंभर्त्रा
रथेस्थित्वागृहंप्रति॥ जगामसहभ
र्त्रासादृष्ट्वागेहंमुदान्विता ॥११॥
भूषणानिचवस्त्राणि शृङ्गाराणिच

को गमन करती भई ॥ ११ ॥ तदनंतर घर के विषय ४
आनकर नाना प्रकार के भूषण और वस्त्रों से शृंगार

आनकर नाना प्रकार के भूषण और वस्त्रों से शृंगार

करके अपने पतिको दिखावती भई ॥ १२ ॥ कौंडिन्य ऋषीश्वर ने वाम हाथ में सूत्रको बँधा हुआ देखकर

कृतानि च । प्राप्य सोऽहे धृतवती भर्त्तारं दर्शयत्स्वकम् ॥१२॥ दृष्ट्वा विप्रः करे सूत्रं सुशीलां वाक्यमब्रवीत् ॥ अहो प्रिये किमर्थं त्वां करे सूत्रस्य धार

कहा हे प्रिये तूने किस लिये यह सूत्र बांधा है सो कहो ॥ १३ ॥ सुशीला बोली हे स्वामिन् ! मेरे घरके विषय

अ० जो धन और संतति है सो अनंत भगवान की कृपा से है इस बचन को सुनकर कौंडिन्य मुनि ने क्रोधवान क०

५

राम् ॥ १३ ॥ सुशीलाउवाच ॥ ममगृहेस्थितालक्ष्मीअनन्तस्यप्रसादतः ॥ श्रुत्वावाक्यंतुमुनिनासूत्रं क्रोधेनतोड़ितम् ॥ १४ ॥ वन्हौ

होकर सूत्रको तोड़कर अग्नि में डाल दिया ॥ १४ ॥ ५
जिस समय मुनिने अग्नि में डाला उसी समय सुशीला

जिस समय मुनिने अग्नि में डाली उसी समय सुशीला

हाहाकार करके अधजला अग्नि से निकाल दुग्ध में स्नान कराय धारण कर पति से बोली ॥ १५ ॥ हे

क्षिप्तंयदासूत्रंहाहाकारोह्यभूत्तदा॥ अर्द्धंदग्धंपुनर्सूत्रं करेधृत्वाह्यवोच सा ॥ १५ ॥ किमर्थं तोडितंसूत्रं वन्हौकेननिवेशितं ॥ उच्चश्वसारुदं

पति ! किस लिये तुमने इस सूत्र को खंडित किया और बन्हिमें किस लिये गेरा ऐसा कहकर उच्च शब्द करके

अ० बहुत दुःख के साथ रुदन करती भई ॥ १६ ॥ ता क०
उपरांत कौंडिन्य के घर का धन और नाना प्रकार की जो
६ गौ और घोड़े थे सब चोर चुराए ले गये ऐसे वह

तीमांबहुदुःखेनदुःखितः ॥ १६ ॥
तस्करैश्च धनंसर्वंधान्यंगावश्चभूरि
शः ॥ आपज्जातातुविप्रस्यमहापा
पेनसत्वरम् ॥ १७ ॥ किङ्करोमि

कौंडिन्य नाम ऋषि महापाप ज्वाल में दुखित हुआ ॥ ६
॥ १७ ॥ फिर अपनी स्त्री सुशीला से बोला । हे प्रिये

॥ १७ ॥ फिर अपनी स्त्री सुशीला से बोला । हे प्रिय

क्या करूं कहां जाऊं ऐसे दुःखके बचन को सुनकर सुशीला बोली हे स्वामिन् ! जहां अनंत भगवान मिलें तहां गमन करो ॥ १८ ॥ ऐसे अपने स्त्री के सत्य

क्वगच्छामिसुशीलेबहुदुःखितः॥
गंतव्यंतत्रभोस्वामिन्अनन्तोयत्र
दृश्यते॥ १९ ॥ इतिसत्यंततोज्ञा
त्वागृहात्प्रचालितोद्विजः॥ गङ्गा

बचन को सुन अपने घरसे गंगा जी के किनारे गमन करता भया वहां जाकर एक कछुवे को महादुखी देखता

अ० भया ॥ १८ ॥ उस कछुवे से पूछा तूने कहीं अनंत क०
भगवान देखे होंय तो वर्णन कर उसने उत्तर दिया कि
७

तीरेगतोविप्रः कूर्म्मं दृष्ट्वाऽतिदुःखि
तम् ॥ १९ ॥ अपृच्छत्‌व्याकुली
भूतअनन्तःकुत्रवर्त्तते ॥ दुःखितस्ते
नदुःखेननहिजानाम्यनंतकम् २०

मैंने नहीं देखे तुम्हें दरशन होंय तो मेरा दुःख भी कहि ७
यो ॥ २० ॥ उसके आगे वह ब्राह्मण आम के वृक्ष को

यो ॥ २० ॥ उसके आगे वह ब्राह्मण आम के वृक्ष को

फलों सहित देखता भया परंतु उसके फल कोई भक्षण नहीं करता था सो उससे भी अनंत भगवान को पूछता भया २१ और कहा हे आमवृक्ष! किस कारण तेरे फलों में

तदाग्रेदृष्टवान्विप्रआम्रवृक्षंफलैर्युतम् ॥ आम्रादिभ्योह्यनंतस्यस्थानंसपृष्टवान्द्विजः ॥ २१ ॥ केनापिगृह्यतेनैवफलंदुर्गंधभावतः ॥ दृष्ट्वा

दुर्गंध है जो कोई भोजन नहीं करता इसी प्रकार एक गौ बड़ी सुन्दर जिसका दुग्ध पृथ्वी में बहता था परंतु

कोई पान नहीं करता था ॥ २२ ॥ उस दुग्धको बछड़ाभी नहीं पीता था सोभी देखता भया आगे जाके एक हिरण दृष्टि में आया उसकी यह दशा देखी कि रात्रि

गौचमहाश्रेष्ठ दुग्धंप्रस्त्रवतेभुवि ॥ ॥ २२ ॥ दुष्टदुग्धंपरित्यक्तंवत्सेना पिनपीयते। मृगमेकंततोदृष्ट्वारात्रौ राज्यकरंतदा ॥ २३ ॥ हस्तिनीच

में राज्य करै दिन के विषै फिर मृग हो जाय ॥२३॥ तदनंतर एक हथिनी देखी जिस पर कोई राजादि

तदनंतर एक हथिनी देखी जिस पर कोई राजादि

सवारी नहीं करता था और उससे आगे चलके एक ऊंट देखा बहुत भार करके दुखित था ॥ २४ ॥ ताके उप-

तदादृष्ट्वाराजानैवावरुह्यते । उष्ट्रमेकंतदादृष्ट्वाबहुभारेणादुःखितम् ॥२४॥ पुष्करणीद्वयंदृष्ट्वापेयंशीतलकंजलम् । मानवैः पक्षिभिश्चा

रान्त पुष्करणी दो नदियां देखी उनका जल बड़ा शीतल था परन्तु तौ भी कोई मनुष्य और पशु पक्षी आदि

अ० ६ जीव जलपान नहीं करते थे ॥ २५ ॥ इन सब को क०
देखकर और पूछकर उत्तर दिशा को गमन करता भया
तिसके अनंतर उसकी परीक्षा के अर्थ अनंत भगवान

पिपशुभिश्चनपीयते ॥ २५ ॥ ए
तान्दृष्ट्वाचपृष्ट्वाच चलितं उत्तरां
दिशाम्। परीक्षार्थंसमायातःअनंतो
विश्वरूपधृक ॥ २६ ॥ कुब्जोवाम

विप्र का रूप धारण करके प्राप्त होते भये ॥२६॥ कुब्ज ६
विप्र जिस समय उस ब्राह्मण के सन्मुख आये सो पूछते

विप्र जिस समय उस ब्राह्मण के सन्मुख आये तो पूछते

भये हे ब्राह्मण ! इस समय तू कहाँ से आया है और कहाँ गमन करेगा ॥ २७ ॥ यह सुन और इनको देख कौंडिन्य बोला हे कुब्जे ! जहां अनंत भगवान मिलेंगे

नरूपेणाविप्रसन्मुखमाययौ ॥ कुतःसमागतोविप्रःसाम्प्रतं क्वगमिष्यसि ॥ २७ ॥ तत्रगच्छाम्यहंकुब्जःह्यनन्तोतत्रवर्त्तते ॥ बालवृद्ध

तहां ही गमन करूंगा, तब अनंत भगवान बोले जो कि ब्राह्मण के रूपमें थे, हे ब्राह्मण ! मैं बालक पने से

अ० बूढ़ा होने को आया मैंने अनंत नहीं देखे ॥ २८ ॥ क०
ऐसे ब्राह्मण के वचन को सुनकर कौंडिन्य तृणमयी चिता

१० त्वमापन्नअनन्तोनैवदृश्यते ॥२८॥
इतिश्रुत्वातुविप्रेन्द्रः चितांकृत्वातुतृ
णमयीं ॥ दग्धंचक्रेयदापन्नस्तदाकु
ब्जेनभाषितम् ॥ २९ ॥ अनन्तो

बनाकर देह त्यागने के अर्थ चिता में गिरने लगा ता १०
समय भगवान बोले ॥२९॥ हे ब्राह्मण ! मैं ही अनंत

समय भगवान बोले ॥२६॥ हे ब्राह्मण ! मैं ही अनंत

हूँ सर्व जीव मेरे ही आधीन हैं मैं तेरे ऊपर प्रसन्न भया
मुझेही तूने अग्नि में दग्ध किया था ॥३०॥ यह सुन

स्मीतिभोविप्रसर्वभूतवशाङ्करः । तु
ष्टोहंत्वयिविप्रेंद्र यदिदग्धोऽप्यहं
त्वया ॥ ३० ॥ कौंडिन्यउवाच ॥ य
दितुष्टोसिमेदेवरूपंदर्शयमेप्रभो ।

कौंडिन्य नामी ऋषि बोले, कि हे देव जो तुम मेरे ऊपर
प्रसन्न भये हो तो अपना चतुर्भुज रूप, शंख, चक्र, गदा, पद्म

धारण करके दर्शन दो ॥ ३१ ॥ इस प्रकार कौंडिन्य ब्राह्मण भगवान से कहता भया तब भगवान् अपना

चतुर्भुजोमहायोगोशंखचक्रगदाधर ॥ ३१ ॥ वाक्यंश्रुत्वातुविप्रस्यरूपदर्शयत्वप्रभो। दृष्ट्वारूपंभगवतःस्तोत्रंतत्रचकारवै ॥ ३२ ॥

चतुर्भुज जो रूप दिखलाते भये उस समय उनके रूपको देखकर कौंडिन्य स्तुति करता भया ॥३२॥ हे पुंडरी

देखकर कौंडिन्य स्तुति करता भया ॥३२॥ हे पुंडरी

काक्ष तुम्हारे अर्थ नमस्कार है कैसे हो तुम लक्ष्मीके पति हो आपका स्वरूप मेघवत श्याम रूप है और कानन में कुंडल धारण किये हो ऐसे जो तुम हो सो तुम्हारे

नमस्तेपुण्डरीकाक्ष लक्ष्मीनाथ नमोस्तुते । नमस्तेश्यामवर्णायश्रुतौकुण्डलभूषिते ॥ ३३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गच्छत्वंत्वरितंविप्रसुशी

अर्थ मेरा नमस्कार है ॥ ३३ ॥ ऐसी स्तुति करी तब भगवान प्रसन्न होय के ऋषि से बोले हे ब्राह्मण तू

शीघ्र घरके बिषे जहाँ तेरी स्त्री सुशीला सन्देह को प्राप्त हो रही है गमन कर और कुम्मादिकों को जो तैने मार्ग में देखा था उनके पूर्व जन्म के पाप हैं वोह

लायत्रातिष्ठति । पूर्वजन्मभवंपापं कूम्मादीनांवदामिते ॥ ३४ ॥ पूर्व जन्मनिविप्रोभूद्वेदवेदाङ्गपारगः । विद्यादानकृतंदानेंकूम्मस्तेनैव दुः

मैं तेरे आगे वर्णन करता हूँ ॥३४॥ जो कच्छप तुझे मार्गमें मिला था वह पूर्वजन्ममें वेद वेदांगका जानने

मार्गमें मिला था वह पूर्वजन्ममें वेद वेदांगका जानने

वाला ब्राह्मण था सो उसने किसी को विद्या का दान नहीं दिया था तिस पाप करके वह कछुवा होता भया ॥ ३५ ॥ और आमका वृक्ष जो देखा सो वह पूर्वजन्म

खितः ॥३५॥ वैश्यः कश्चित्धना ढ्योभूत्पूर्वजन्मनिचाम्रकः ॥ दा नंविनास्वयंभोक्ता तेनपापेनदुः खितः॥३६॥गौभूत्पृथिवीपूर्वंब्रह्मवी

का एक वैश्य साहूकार था परन्तु दान नहीं करता था अपने धनको आपही रक्खा इस पाप करके उसके फलों

में दुर्गंध थी ॥ ३६ ॥ जो गौ मिली थी वह पूर्व जन्म
में पृथ्वी थी जो कोई ब्राह्मण. अन्न बोने के अर्थ बीज
धरती में डालता उसका बीज चुरा लेती थी और मृग

जापहारिणी॥ पूर्वस्मिन्राजपुत्रो
भूत्नास्तिको मृगरूपकः ॥३७॥
पूर्वजन्मनिकन्यासीतहस्तिनी दु
श्चारिणी ॥ उष्ट्रोभूत्तुद्विजः पूर्वव

पूर्वजन्म में राजा था ॥ ३७ ॥ और जो हस्तनी देखी
वह पूर्वजन्म में कन्या थी परंतु व्यभिचारिणी थी और

वह पूर्वजन्म में कन्या थी परंतु ब्यभिचारिणी थी और

तुझे जो ऊंट मिला था वह पूर्वजन्म का ब्राह्मण था वेदों की निन्दा किया करता और जो दान लेनेके योग्य न होते उनको भी ले लेता इस पाप से यह ऊंट भया॥

द्वाह्यप्रतिग्रही ॥ ३८ ॥ पुष्करणी द्वयंयत्तुदानंदत्तंपरस्परम् ॥ सर्वेषा मुत्तारंदत्वागंतव्यंस्वग्रहंतथा ।३९।

॥ ३८ ॥ जो दोनों नदियां पुष्करणी नामा मार्ग में देखी थीं वह पूर्वजन्म में दोनों बहनें थीं आपस में दान लेती देती थीं किसी पुरुष को नहीं दिया सो सबों को

अ० यथायोग्य उत्तर देकर श्री अनंत भगवान ने कहा हे
स्वामी तुमको अपने घर अवश्य जाना योग्य है॥३९॥ क०
ऐसा कहकर भगवान जो भक्तों को अभय के देने
१४

इत्युक्त्वांतरंदेवो भक्तानामभयंक
रः॥ सर्वेषामुत्तरंदत्वा व्रतंचोक्त्वा
गृहंययौ ॥ ४० ॥ ततोधिकंधनंह

वाले हैं सो अन्तर्ध्यान होते भये तिस पीछे कौंडिन्य
ऋषी उन सबों को उत्तर देता हुआ घरके प्रति जाता १४
भया ॥ ४० ॥ तदनंतर घर जाकर अधिक धन के

भया ॥ ४० ॥ तदनंतर घर जाकर अधिक धन के

विषय देख और अनेक गौवें दूध देती हुईं देखता भया इतनी कथा कहकर श्री कृष्ण युधिष्ठिर सों बोले, हे राजन् ! जबसे इस ब्रतका प्रारंभ भया। इस ब्रतको

ष्ट्वागावोदुग्धंअनेकंधा ॥ तदारभ्य ब्रतंराजन्कौंडिन्येनप्रकाशितम्। ॥ ४१ ॥ उपचारैर्मंत्रयुतैरनंतंपूज येत्सदा ॥ ब्रतंसंकल्प्यविधिवत्कर्त्त

कौंडिन्य ऋषि ने प्रकाश किया ॥ ४१ ॥ सो वह वेद मंत्रों करके सदा अनंत भगवान का पूजन श्रद्धा पूर्वक

कर्ता और प्रति वर्ष वर्षवें दिन विधि पूर्वक पूजन करता ॥ ४२ ॥ कैसा यह व्रत है सब पापों को नाश करनेवाला है दोनों लोकों में सुख का देनेवाला है इस

व्यंप्रतिवत्सरं ॥ ४२ ॥ सर्वपापह
रंनृणांपरत्रेहसुखप्रदम् ॥ कर्त्तव्य
ञ्चकथांश्रुत्वादानंदत्त्वाद्विजातये
॥ ४३ ॥

व्रतको धारण करके कथा श्रवण करना योग्य है ता उपरांत ब्राह्मण को दान देवे ॥ इति ॥

इतिश्रीस्कंदपुराणे श्रीकृष्णायुधिष्ठिर सम्वादे अनन्त व्रत कथा समाप्तम् ।

इति श्रीस्कंदपुराणे श्रीकृष्ण युधिष्ठिर सम्बादे अनन्तव्रतकथा समाप्तम् ॥



अ० १६

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

बा० ठाकुर प्रसाद गुप्त बुकसेलर,

कचौड़ी गली बनारस सिटी।

महादेव प्रसाद द्वारा

क० १६

अर्जुन प्रेस कबीर चौरा बनारस सिटी में मुद्रित।

क०

॥ इति ॥

अनन्तव्रत कथा भा०टी०

समाप्ता:

पुस्तक मिलने का पता:—

बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुकसेलर, कचौड़ीगली, बनारस सिटी।